



Om

अथर्ववेद 1.1.1

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे॥१॥

(ये) ये (त्रिषप्ताः) तीन गुणा सात (परियन्ति) सर्वत्र व्यापक (विश्वा) सब जगह (रूपाणि) रूप (बिभ्रतः) धारण करते हुए (वाचस्पतिः) वाणियों और ज्ञान का स्वामी (बला) बल (तेषाम्) उनको (तन्वः) शरीर का (अद्य) आज (दधातु) देता है (मे) मेरे लिए।

व्याख्या :-

सभी रूपों के आधार मूल तत्त्व कितने हैं?

इस सूक्त के ऋषि 'अथर्व' हैं और देवता 'वाचस्पति' हैं।

सभी रूपों में तीन गुणा सात अर्थात् इक्कीस तत्त्व सर्वत्र व्याप्त हैं। वाणियों और ज्ञान के स्वामी, उन्हें धारण करते हुए, कृपया मुझे आज भी शरीर का बल प्रदान करे।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमें ज्ञान की यात्रा कहाँ से प्रारम्भ करनी चाहिए?

हमारी जीवन सृष्टि का रहस्य कौन हमें समझा सकता है?

अथर्ववेद की प्रथम प्रेरणा यह है कि हम सारी सृष्टि के सभी रूपों में व्याप्त 21 तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त है। इससे प्रारम्भ होती है सर्वप्रथम, मानव शरीर को समझने की यात्रा और उसके बाद इस ज्ञान की यात्रा को सृष्टि के सभी भौतिक रूपों से होते हुए अन्ततः सृष्टि के निर्माता तत्त्वों के।

हमारे शरीर के मूल तत्त्वों के ज्ञान का अभाव हमें अंधेरे में ही घुमाता रहेगा। जबकि हमारे शरीर के तत्त्वों तथा उनके बनने और कार्य करने की प्रक्रिया की स्पष्ट समझ हमें इस सृष्टि में किसी भी वस्तु को समझने के मार्ग को सुगम कर देगी, क्योंकि जो कुछ भी इस सृष्टि में है वही समान रूप से इस शरीर में है – यथा ब्रह्माण्ड, तथा पिण्डे।

इस सृष्टि के मूलतः दो कारण हैं – निमित्त कारण अर्थात् अदृश्य निर्माता तथा उपादान कारण अर्थात् दृश्यमान सृष्टि।

(क) निमित्त कारण अदृश्य निर्माता है जो इस सृष्टि का सर्वोच्च आत्मा अर्थात् परम आत्मा है और इसी को 'वाचस्पति' कहकर सम्बोधित किया गया है, जो वाणियों और ज्ञान का स्वामी है। 'वाचस्पति' परमात्मा का ही एक कार्य लक्षण है जिसने दृष्टा ऋषियों को ज्ञान दिया।

(ख) इस सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति की मूल शक्ति है।

निमित्त कारण और उपादान कारण दोनों ही सर्वोच्च शक्ति परमात्मा का ही अंग हैं। जिन्होंने परमात्मा के इक्षण अर्थात् इच्छा और योजना को भिन्न-भिन्न रूपों में उदय करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की – 'एको अहम् बहु स्याम' अर्थात् मैं एक हूँ, बहुत हो जाऊँ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(ग) यह दोनों कारणा मिलकर महत बन जाते हैं जो सृष्टि की बुद्धि हैं अर्थात् सृष्टि के उदय होने की प्रक्रिया में यह तीसरा तत्त्व है।

(घ) इस महत में परिवर्तन होकर अहंकार की उत्पत्ति होती है जो एक सामान्य अस्तित्व का भाव है।

(ङ) यह अहंकार दो दिशाओं में अपना उदय करता है – 1. भौतिक, 2. मानसिक।

प्रकृति के उदय का भौतिक पहलू निम्न प्रकार से विकसित होता है :-

(क) पंच महाभूत अर्थात् पांच स्थूल तत्त्व – 1. आकाश, 2. वायु, 3. अग्नि या सूर्य, 4. जल तथा 5. पृथ्वी।

(ख) पंच तन्मात्रा अर्थात् पांच सूक्ष्म तत्त्व – 1. शब्द, 2. स्पर्श, 3. रूप, 4. रस तथा 5. गन्ध। यह पांचों तन्मात्राएँ क्रमशः पंच महाभूत तत्त्वों से ही सम्बन्धित हैं।

प्रकृति के उदय का मानसिक पहलू निम्न प्रकार से विकसित होता है :-

(क) पांच ज्ञानेन्द्रियाँ – 1. स्रोत अर्थात् कान, 2. त्वक अर्थात् त्वचा, 3. चक्षु अर्थात् आंखें, 4. रसना अर्थात् जीभ, 5. घ्राण अर्थात् नाक।

(ख) पांच कर्मेन्द्रियाँ – 1. वाक् अर्थात् मुख, 2. पाणी अर्थात् हाथ, 3. पाद अर्थात् पाँव, 4. पायु अर्थात् मलद्वार तथा 5. उपस्थानि अर्थात् मूत्रेन्द्रिय, लिंग।

(ग) मन उभय इन्द्रिय है अर्थात् ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय दोनों।

इस प्रकार दस भौतिक तत्त्व और ग्यारह मानसिक तत्त्व सब मिलकर त्रिषप्ताः के रूप में सम्बोधित किये गये हैं। हमें इन तत्त्वों के बारे में विस्तार पूर्वक जानना चाहिए।

श्री हरिहरण सिद्धान्तालंकार जी ने इन 21 तत्त्वों को जानने का अलग उपाय किया है।

1. महत अर्थात् सार्वभौमिक बुद्धि।

2. अहंकार अर्थात् सामान्य अस्तित्व बोध।

3. से 7, पांच तन्मात्राएँ अर्थात् सूक्ष्म तत्त्व – 1. शब्द, 2. स्पर्श, 3. रूप, 4. रस तथा 5. गन्ध।

यह सातों तत्त्व तीन गुणों से प्रभावित होते हैं अर्थात् सत्त्व (शुद्धता), रज (गतिविधियाँ) और तम (अन्धकार) इस प्रकार 7 को 3 से गुणा करने पर 21 तत्त्व बनते हैं जो सृष्टि के हर रूप में व्याप्त हैं और उसको धारण करते हैं।

क्षेमकरणदास त्रिवेदी जी के अनुसार 21 तत्त्वों की गणना दो प्रकार से होती है –

प्रथम तीन दृष्टियों के सात वर्ग अर्थात् –

1. सृष्टि को देखने के तीन आयाम – परमात्मा, जीव और प्रकृति।
2. तीन गुण अर्थात् सत्त्व (शुद्धता), रज (गतिविधियाँ) और तम (अन्धकार)।
3. समय के तीन भाग – भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल।
4. परमात्मा के तीन उच्च कार्य लक्षण – ब्रह्मा, विष्णु और महेश अर्थात् सृष्टि का निर्माता, पालनकर्ता और विलयकर्ता।
5. तीन स्थान – द्युलोक अर्थात् स्वर्ग आकाश, मध्यलोक अर्थात् मध्य आकाश और भूलोक अर्थात् पृथ्वी।
6. तीन दोष – वात अर्थात् वायु, पित्त अर्थात् गर्मी, कफ अर्थात् जल। यह तीनों दोष हमारे शरीर तथा सभी खाद्य पदार्थों में भिन्न-भिन्न मात्राओं में होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



7. हमारे जीवन के तीन शरीर – स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर।

द्वितीय, सात दृष्टियों के तीन वर्ग अर्थात् –

1. सात सूर्य अर्थात् आदित्य।
2. सात ऋषि,
3. सात समुद्र।

21 तत्त्वों को गिनने का एक और तरीका है – 12 महीने, 5 ऋतुएं, 3 लोक, एक सूर्य।

21 तत्त्वों का एक और वर्ग है – 5 महाभूत, 5 प्राण, 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ और एक अन्तःकरण। 'वाचस्पति' अर्थात् वाणियों और ज्ञान के स्वामी, परमात्मा, के साथ जुड़कर आप किसी प्रकार से भी इस सृष्टि को समझ सकते हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ से केवल एक ही सर्वोच्च गुरु मानव शरीर में सभी आत्माओं को ज्ञान देता रहा है। योगदर्शन (1.26) के अनुसार 'सः पूर्वं श्याम अपि गुरु कालेन अन्वच्छेदात्।'।

सांख्य दर्शन में भी सृष्टि के 25 तत्त्वों के माध्यम से परमात्मा की श्रेष्ठता स्थापित की गई है। सारी सृष्टि को और अपने मानव जीवन को समझने का यही एकमात्र मार्ग कि इसमें क्या वास्तविक और स्थाई है और क्या अवास्तविक और अस्थायी है।

सूक्ति :- (ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि – अथर्ववेद 1.1.1) सभी रूपों में तीन गुणा सात अर्थात् इक्कीस तत्त्व सर्वत्र व्याप्त हैं।

अथर्ववेद 1.1.2

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥2॥

(पुनः) दुबारा (एहि) कृपया आओ (वाचस्पते) वाणियों और ज्ञान का स्वामी (देवेन) दिव्य (मनसा) मन (सह) के साथ (वसोः पते) यज्ञ का स्वामी, श्रेष्ठता का स्वामी (नि) लगातार (रमय) मुझे ले चलो, मुझे गति दो (ज्ञान के द्वारा) (मयि इव अस्तु) मेरे में रहो (मयि श्रुतम्) मेरे द्वारा सुने गये (ज्ञान)।

व्याख्या :-

ज्ञान के मार्ग को किस प्रकार बना कर रखें?

वाणियों और ज्ञान के स्वामी! कृपया दिव्य मन के साथ मेरे पास आओ।

यज्ञ और श्रेष्ठता के स्वामी! कृपया मुझे लगातार इस ज्ञान में लेकर चलो।

यह ज्ञान सदैव मुझमें रहे और मेरे द्वारा सुना जाता रहे।

जीवन में सार्थकर्ता :-

ज्ञान के स्वामी अर्थात् गुरु की विदाई किस प्रकार करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



एक गुरु या मार्गदर्शक से ज्ञान प्राप्त करने के बाद या अनुभूति से ज्ञान प्राप्त करने के बाद हम ज्ञान के स्वामी से यह प्रार्थना करते हैं कि ज्ञान की इस धारा को बिना रोके हमारे लिए जारी रखें, जब तक यह हमारी अनुभूति में न आ जाये। गुरु की विदाई के समय या ध्यान-साधना के बाद हम इस मन्त्र का उच्चारण कर सकें जिससे हम इस प्रक्रिया को बार-बार आमंत्रित करें।

सूक्ति :- 1. (पुनः एहि वाचस्पते देवेन मनसा सह – अथर्ववेद 1.1.2) वाणियों और ज्ञान के स्वामी! कृपया दिव्य मन के साथ मेरे पास आओ।
2. (मयि इव अस्तु मयि श्रुतम् – अथर्ववेद 1.1.2) यह ज्ञान सदैव मुझमें रहे और मेरे द्वारा सुना जाता रहे।

अथर्ववेद 1.1.3

इहैवाभि वि तनूमे आर्त्नी इव ज्यया।
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥३॥

(इह एव अभि) यहाँ, हर प्रकार से (वि तनू) विशेष रूप से ध्यानस्त (उभे) दोनों पर (भौतिक और आध्यात्मिक) (आर्त्नी) धनुष का (इव) जैसे कि (ज्यया) धनुष की डोर (वाचस्पतिः) वाणियों और ज्ञान के स्वामी (नि) नियमित रूप से (यच्छतु) अनुशासन में रखे (मयि इव अस्तु) मेरे में रहो (मयि श्रुतम्) मेरे द्वारा सुने गये (ज्ञान)।

व्याख्या :-

एक अध्यापक को अनुशासन कैसे बनाना चाहिए?

ज्ञान की इस प्रक्रिया में दोनों अध्यापक और शिष्य को जीवन के दोनों पहलुओं पर अर्थात् भौतिक और आध्यात्मिक रूप से ध्यानस्त रहना चाहिए जैसे – धनुष के दो किनारे केवल बीच के छोर पर केन्द्रित रहते हैं। वाणियों और ज्ञान के स्वामी को शिष्य को पूर्ण अनुशासन में रखना चाहिए। यह ज्ञान सदैव मुझमें रहे और मेरे द्वारा सुना जाता रहे।

जीवन में सार्थकर्ता :-

शिष्य अपने ज्ञान को किस प्रकार स्थायित्व दे सकता है?

गुरु और शिष्य की अनुभूति पूरे अनुशासन में रहनी चाहिए। तभी शिष्य जीवन के दोनों पहलुओं, भौतिक और आध्यात्मिक, को समझ सकता है और उस ज्ञान को सम्पूर्ण जीवन अपने साथ क्रियात्मक रूप से रख सकता है।

अथर्ववेद 1.1.4

उपहृतो वाचस्पतिरुपास्मान्वाचस्पतिर्ह्वयताम्।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि ॥४॥

(उप हूतः) आह्वान करना (वाचस्पतिः) वाणियों और ज्ञान के स्वामी (उप – हवयताम् से पूर्व लगाकर) (अस्मान्) हमें (वाचस्पतिः) वाणियों और ज्ञान के स्वामी (हवयताम् – उप हवयताम्) निकट बुलाओ (सम् – गमेमहि से पूर्व लगाकर) (श्रुतेन) सुना गया (गमेमहि – सम् गमेमहि) सम्बद्ध करो (मा) नहीं (श्रुतेन) सुना गया (वि राधिषि) अलग।

व्याख्या :-

एक गम्भीर शिष्य सर्वोच्च अध्यापक से क्या आशा करता है?

वाणियों और ज्ञान के स्वामी का आह्वान किया जाता है। वह स्वामी प्रेरणाओं के लिए हमें अपने निकट बुलाये। हम सुने गये ज्ञान के साथ क्रियात्मक रूप से सम्बद्ध हो सकें। हम उस सुने गये ज्ञान से कभी पृथक न हों।

जीवन में सार्थकर्ता :-

एक गम्भीर शिष्य सर्वोच्च गुरु को क्या आश्वासन देता है?

एक शिष्य अपने सर्वोच्च गुरु से यह आशा करता है कि वह अपने निकट बुलाये और इसके बदले वह शिष्य दो संकल्पों का आश्वासन देता है :-

1. वह अपने ज्ञान को जीवन में क्रियात्मक रूप से धारण करेगा। इसे ज्ञान को आत्मसात करना कहते हैं।
2. वह इस ज्ञान से कभी पृथक नहीं होगा। इसका अर्थ यह है कि वह ज्ञान और क्रियात्मक जीवन के बीच किसी प्रकार का अन्तर नहीं आने देगा और सदैव मूल्यों के मूल को ध्यान में रखेगा।

सूक्ति :- 1. (उप हूतः वाचस्पतिः उप हवयताम् अस्मान् वाचस्पतिः – अथर्ववेद 1.1.4) वाणियों और ज्ञान के स्वामी का आह्वान किया जाता है। वह स्वामी प्रेरणाओं के लिए हमें अपने निकट बुलाये।

2. (सम् गमेमहि श्रुतेन मा श्रुतेन वि राधिषि – अथर्ववेद 1.1.4) हम सुने गये ज्ञान के साथ क्रियात्मक रूप से सम्बद्ध हो सकें। हम उस सुने गये ज्ञान से कभी पृथक न हों।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171